The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 9 | September 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

छात्रों की शैक्षिक सफलता में सुधार के प्रति शिक्षक के नेतृत्व एवं गुणों का योगदान

डॉ0 मो0 फिरोज़ आलम,

सहायक प्रोफेसर, मानू , कॉलेज ऑफ़ टीचर एजुकेशन, दरभंगा, बिहार, firozmimt@rediffmail.com

डॉ0 मोजफ्फर इस्लाम,

सहायक प्रोफेसर, मानू, कॉलेज ऑफ़ टीचर एजुकेशन, दरभंगा, बिहार, mislam1manuu@gmail.com

डॉ0 मो0 मौसूफ़ रज़ा

सहायक प्रोफेसर, मानू, कॉलेज ऑफ़ टीचर एजुकेशन, दरभंगा, बिहार, raza.jmi09@gmail.com

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17338400

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 27-09-2025

Published: 10-10-2025

Keywords:

भारतीय संस्कृति, सदाचार, शैक्षिक विचारक, संवेदनशीलता व अंतःज्ञान

ABSTRACT

आज के शिक्षक व विद्यार्थी भारतीय संस्कृति, सदाचार एवं नैतिक मूल्यों को आत्मसात करने के बजाए भौतिकता के आकर्षण के पीछे भागते दिखाई देते हैं। अतः आवश्यकता इस बात की है कि प्रारम्भ से बालकों में अच्छी आदतों, संस्कारों एवं मानवीय मूल्यों की भावनाओं को समावेषित करने का प्रयास किया जाए। शायद इसी आवश्यकता को महसूस करते हुए महान शैक्षिक विचारक जे. कृष्णमूर्ति एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की आधारषिला रखने को कृतसंकल्प हुए जो विद्यार्थी को वास्तविकता का बोध कराते हुए प्रेम, करूणा, प्रज्ञा, संवेदनशीलता व अंतःज्ञान आदि गुणों से युक्त बनाए। मानीय मूल्यों से समन्वित शिक्षा की परिकल्पना के द्वारा वह 'बालकों का व्यक्तित्व निर्माण' करना चाहते थे। एक अध्यापक को चाहिये कि वह बालक को स्वतन्त्रता के सही अर्थों की पहचान कराये आज स्वतन्त्रता के प्रति जो भ्रम है वह बहुत ही गलत है। बालकों से यह संस्कार डाले जाये कि स्वतन्त्रता है पर वहीं तक जहां तक दूसरे की स्वतन्त्रता का हनन नहीं हो। अध्यापक को समझाना होगा कि

स्वतन्त्रता स्वच्छन्दता नहीं है जिस प्रकार से अनुशासन बन्धन नहीं है। यह बताना इसलिये भी जरूरी है कि गूढ़ अर्थों में स्वतन्त्रता ही अनुशासन में निहित है।

1. प्रस्तावना

शिक्षण कार्यक्रम की योजना तथा शैक्षिक प्रक्रिया के नियोजन हेतु उच्च प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों का शिक्षण के प्रति दृश्टिकोण अत्यन्त आवश्यक है। चूंकि प्राथमिक स्तर की शिक्षा समस्त शैक्षिक प्रक्रिया की नींव है, शिक्षक के उपर्युक्त गुणों को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक है कि शिक्षक व्यवसाय में वही पदार्पण करे जो कि इस व्यवसाय के उपयुक्त हो अर्थात यदि शिक्षक कर्तव्यनिश्ठ, समय का पाबन्द, देशभक्त, अनुषसनप्रिय, दयाषील व क्षमाशील हैं तो वह धर्मनिरपेक्ष समाजवादी समाज के लिए ऐसे छात्र तैयार कर सकता है जो कि इस प्रकार की व्यवस्था के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हों। इसके विपरीत यदि शिक्षक स्वयं ही जीवन व मानवता के मूल्यों, सिद्धान्तों का पालन नहीं करता तो वह छात्रों को किस प्रकार अनुषासनप्रिय, दयाषील तथा योग्य बना सकता है।

कुषल शिक्षक छात्रों की रूचि एवं आवष्यकताओं के अनुरूप अपने को ढ़ालकर छात्र एवं ज्ञान दोनों को अपना केन्द्र बिन्दु बना लेता है। वह छात्रों को केवल पढ़ाता नहीं है वरन स्वयं भी प्रज्वलित रहने के लिए अपने को लगातार जलाए रखता है। अधिगम शिक्षण के अभाव में हो सकता है, किन्तु बिना अधिगम के शिक्षण भ्रामक एवं घातक है। वर्तमान में शिक्षक की कार्यकुशलता एवं कर्त्तव्य परायणता पर अंगुली उठने लगी है। शिक्षा के गिरते स्तर, विद्यालयों की शोचनीय स्थिति छात्रों का गिरता स्तर इत्यादि तथ्यों को देखकर शिक्षकों की योग्यता पर कार्यकुशलता पर प्रश्न चिन्ह लग गया है। आज वर्तमान में इन सभी कारणों का उत्तरादायी शिक्षक को माना जाने लगा है। इसलिए शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि करने के लिए शिक्षक मूल्यांकन की आवश्यकता महसूस की जाने लगी है।

उपर्युक्त उद्देश्य की पूर्ति तभी संभव है जबकि शिक्षकों की अभिवृत्ति, मानसिक योग्यता एवं मूल्यों का उनकी शिक्षक प्रभावषीलता के निर्धारक के संदर्भ में अध्ययन किया जाये और जिन शिक्षकों को इस व्यवसाय के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति, मानसिक योग्यता एवं मूल्यों का उनकी शिक्षक प्रभावशीलता के निर्धारक के संदर्भ में उनको ही इस कार्य हेतु नामांकित किया जाए ताकि शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन अध्यापन हेतु निधा्ररित की जाने वाली पाठय पुस्तकों का प्रयोग किया जाये, क्योंकि आज के दौर में प्राथमिक स्तर में काफी कठिनाईयॉ देखने को मिलती हैं। वहां पर शिक्षक आज भी अपनी जिम्मेदारी से काम नहीं कर पाता है क्योंकि आज शिक्षक में वे अभिवृत्ति, मानसिक योग्यता एवं मूल्य ही नहीं रहे जिस पर छात्र विश्वास करता था।

2. नेतृत्व की परिभाषाएं

1. जॉर्ज आर. टेरी ने नेतृत्व को उस योग्यता के रूप में परिभाषित किया है जो उद्देश्यों के लिए स्वेच्छा से कार्य करने हेतु प्रभावित करता है।

2. लिंविग्स्टन के अनुसार नेतृत्व से आशय उस योग्यता से है जो अन्य लोगों में एक सामाजिक उद्देश्य का अनुसरण करने की इच्छा जाग्रत करती है।

3. मूरे नेतृत्व को एक ऐसी योग्यता मानते हैं जो व्यक्तियों कोनेता द्वारा अपेक्षित विधि के अनुसार कार्य करने के लिए प्रेरित करती है।

4. जॉन जी. ग्लोवर नेतृत्व को प्रबन्ध का वह महत्वपूर्ण पक्ष मानते है। जो उस योग्यता, सृजनशीलता, पहल शक्ति तथा सहानुभूति को व्यक्त करताहै जिसकी सहायता से संगठन प्रक्रिया में मनोबल का निर्माण करके लोगों का विश्वास, सहयोग एवं कार्य करने की तत्परता प्राप्त की जाती है।

5. ऑर्डवे टीड के अनुसार, “नेतृत्व उन गुणों के संयोग का नाम है जिनको रखने पर कोई व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से काम लेने के योग्य होता है, विशेषकर उसके प्रभाव द्वारा अन्य लोग स्वेच्छा से कार्य करने के लिए तैयार हो जाते हैं।”

उपर्युक्त परिभाषाओं का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि नेतृत्व एक दी हुई स्थिति में लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में किसी व्यक्ति या समूह के प्रयासों को प्रभावित करने की प्रक्रिया है।

3. नेतृत्व की प्रमुख विशेषताएं

1. अनुयायिओं को एकत्रित करना - बिना अनुयायियों के नेतृत्व की कल्पना करना कठिन है। वास्तव में, बिना समूह के नेतृत्व का कोई अस्तित्व ही नहीं है, क्योंकि नेता या नायक केवल अनुवावियों अथवा समूह पर ही अपने अधिकार का प्रयोग कर सकता है।

2. अचारण एवं व्यवहार को प्रभावित करना -नेतृत्व, प्रभाव के विचार की अपेक्षा करता है, क्योंकि बिना प्रभाव के नेतृत्व की कल्पना नहीं की जा सकती। नेतृत्व की सम्पूर्ण अवधारणा अब व्यक्तियों के एक-दूसरे के प्रभाव पर केन्द्रित है। लोक प्रशासन में नेतृत्व की भूमिका का सार ही यह है कि कोई अधिषाशी किस सीमा तक अपने सहयोगी अधिशासियों के आचरण का या व्यवहार को अपेक्षित दिशा में प्रभावित कर सकता है।

3. पारम्परिक सम्बन्ध: मेरी पार्कर फौले ने नेता तथा अनुयायियों के मध्य पारस्परिक सम्बन्ध को नेतृत्व की प्रमुख विशेषता माना है नेता वह नहीं है जो दूसरों की इच्छा को निर्धारित करता है, परन्तु वह है जो यह जानता है कि दूसरों की इच्छाओं को किस प्रकार अन्तर-सम्बन्धित किया जाय कि उनमें एक साथ मिलकर कार्य करने की प्रेरणा स्वतः जाग्रत हो सके।

4. अच्छे नेतृत्व की शैली

1. कथनी शैली -

1. औसत से अधिक कार्य- अभिमुखी और औसत से कम सम्बन्ध-अभिमुखी।
2. इस शैली के लिए 'कथनी' शब्द का अर्थ है कि अनुयायियों से कहना या उन्हें आदेश देना कि उन्हें क्या, कहां और कैसे करना है।
3. यह शैली तब सर्वाधिक उपयुक्त है जब अनुयायियों की तत्परता का स्तर औसत से बहुत कम है अर्थात उनमें योग्यता और सहयोगशील दोनों की कमी है। ऐसे में उन्हें निदेशित किए जाने की जरूरत है।
4. इसे मार्गदर्शक, निदेशक या संरचक (guidancing] directing or structuring) शैली भी कहा जा सकता है।

2. विक्रयी शैली -

1. औसत से अधिक कार्य-अभिमुखी और सम्बन्ध-अभिमुखी।
2. इस शैली के लिए 'विक्रयी' शब्द का अर्थ है कि यहां अनुयायियों को सिर्फ मार्गदर्शन नही दिया जाता, बल्कि उन्हें अपनी बात कहने और स्पष्टीकरण मांगने का अवसर भी दिया जाता है। यहां क्या, कहां और कैसे के साथ-साथ 'क्यों' भी जुडा है। यहां 'क्यो' का स्पष्टीकरण ही इसे कथनी शैली से अलग करता है।
3. यह शैली तब सर्वाधिक उपयुक्त है जब अनुयायियों की तत्परता का स्तर औसत से कम है अर्थात् यद्यपि वे सभी अयोग्य हैं लेकिन प्रयासरत भी है और अपने इस प्रयत्न पर आश्वस्त है।
4. इसे व्याख्यापरक, सम्मतिपरक या स्पष्टीकृत(eÛplaining] persuading or clarifying) शैली भी कह सकते है।

3. सहभागी शैली -

1. औसत से कम कार्य-अभिमुखी और औसत से अधिक सम्बन्ध-अभिमुखी व्यवहार।
2. इस शैली के जिए 'सहभागी' शब्द का आशय है कि यहां नेता के निदेशित व्यवहार की तुलना में समर्थित व्यवहार का महत्तव बढ जाता है। यहां नेता की भूमिका अपने अनुयायियों को सम्प्रेषित करने और उन्हें प्रोत्साहित करने की बन जाती है।

4. नेतृत्व के कार्य

नेतृत्व के कार्यों के सम्बन्ध में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। अलग-अलग विद्वानों ने नेतृत्व की कार्य सूची में भिन्न-भिन्न कार्यों। को सम्मिलित किया है, जो इस प्रकार हैंः -

1. डाल्टन ई. मैक्फारलैण्ड ने नेतृत्व के कार्यों में भिन्न बातों को सम्मिलित किया है: (1) समूह लक्ष्यों का निर्धारण करना, (2) योजना का निर्माण करना (3) नीति तथा क्रियाविधि निर्धारित करना।, (4) अधीनस्थों का पक्ष-प्रदर्शन करना, (5) कार्यकुशल कर्मचारियों का समूह तैयार करना तथा उनका संरक्षण करना, (6) अधीनस्थों के व्यवहार का उनकी उपलब्धियों के सन्दर्भ में मूल्यांकन करना, (7) अनुयायियों के लिए एक आदर्श प्रदान करना।
2. नॉरमैन एफ. वाशबर्न ने एक अच्छे नेता द्वारा किये जाने वाले निम्न आठ कार्यों का वर्णन किया है: (1) क्रियाओं का सूत्रपात करना, (2) आदेश प्रदान करना, (3) अपने समूह में स्थापित वाहिकाओं का प्रयोग करना, (4) अपने समूह के नियमों एवं प्रयाओं को जानना और उनकी अनुपालन करना, (5) अनुशासन बनाये रखना, (6) अधीनस्थों को सूनना, (7) अधीनस्थों की आवश्यकताओं के प्रति जागरूक रहना, तथा (8) अधीनस्थों की सहायता करना।

उक्त आधारों पर कहा जा सकता है कि एक नेता को निम्नलिखित प्रमुख कार्य करने पड़ते हैं:-

1. अधीनस्थों की भावनाओं एवं समस्याओं को समझना- सफल नेतृत्व के लिए यह आवश्यक है कि नेता को अपने समूह के सदस्यों एवं अपने अधीनस्थों की भावनाओं एवं समस्याआं को अच्छी तरह से समझना चाहिए। लोकतान्त्रिक समाज में कर्मचारियों की भावनाओं एवं समस्याओं की अवहेलना नहीं की जा सकती।
2. सहयोग प्राप्त करना-एक प्रशासनिक संगठन के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों की प्राप्ति समस्त कर्मचारियों के सहयोग से ही सम्भव हो सकती है। अतः आवश्यक है कि एक नेता को सफल होने के लिए अपने समूह के कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त हो। इसके लिए उसे प्रशासक के रूप में अपने अधीनस्थों का सहयोग प्राप्त करना आवश्यक है। इसके लिए यह आवश्यक दिलाये कि उपक्रय की सफलता उनके हित में है।
3. समन्वय एवं निदेशन-एक सफल नेता का तृतीय प्रमुख कार्य अपने अधीनस्थों के कार्यों में आदेश एवं निदेशक द्वारा समन्वय स्थापित करना है। इसके लिए उसे संप्रेक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाना होगा तथा आदेश एवं निदेशन की प्रक्रिया में भी मानवीय सम्बन्धों को विशेष रूप से ध्यान में रख्ना होगा।

4. अनुशासन बनाये रखना - नेता का चौथा कार्य अपने समूह में अनुशासन बनाये रखना भी है क्योंकि अनुशासन द्वारा ही अपने अधीनस्थों को निर्धारित नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित कर सकता है। और कार्य को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए अनुशासन में निहित शक्ति का प्रयोग कर सकता है।
5. आदेश देना- नेता स्वयं कार्य न करके अपने अधीनस्थों से कार्य लेता है। अतः उनके द्वारा कार्य को सम्पादित कराने हेतु उसे आदेश देना पड़ता है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि आदेश देना ही नेता का एक महत्वपूर्ण कार्य है।
6. प्रभावी संप्रेक्षण की व्यवस्था करना-संगठन की गतिविधियों में सामंजस्य एवं सन्तुलन बनाये रखने के लिए और कर्मचारियों में मधुर सम्बन्धों एवं भाईचारे का वातावरण स्थापित करने लिए प्रबन्धकों अर्थात् समूह नायकों को संप्रेषण की उचित व्यवस्था करनी चाहिए। इस दिशा में नेता ही इस प्रकार की संप्रेषण प्रक्रिया की व्यवस्था करता है, जिससे अधीनस्थों और उसके मध्य विचारों, आदेशों, आदि का आदान-प्रदान निरन्तर होता रहे।
7. संगठन के प्रति निष्ठा बनाये रखना- एक कुशल नेता का यह भी प्रमुख कार्य है कि वह अपने अधीनस्थों से सम्बन्धित निर्णय आम सहमति से लें।
8. सहयोग प्राप्त - नेता अपने समूह से सहयोग प्राप्त करता है। सहयोग द्विमार्गीय प्रक्रिय होती है। अधिकारी और समूह दोनों के सहयोग से ही कार्य को सर्वश्रेष्ठ ढंग से पूरा करना सम्भव होता है।
9. शक्ति का प्रयोग -नेतृतव के साथ शक्ति जुड़ी होती है। इस शक्ति का प्रयोग न्यायिक एवं सहानुभूतिपूर्ण तरीके से भी तय किया जा सकता है और बल एवं उत्पीड़न के द्वारा भी किया जा सकता है। वस्तुतः एक नेता अपनी शक्ति, काप्रयोग उपक्रम ओर समूह के हित साधन में करता है।
10. समन्वय एवं आदेश- वांछित परिणाम की प्राप्ति के लिए नेता आदेशों के माध्यम से अपने अधीनस्थों के कार्यों में समन्वय स्थापित करता है। लिविंग्स्टन के अनुसार नेता द्वारा दिये जाने वाले आदेश स्ुनिश्चित क्रमबद्ध, लोचपूर्ण और स्पष्ट होने चाहिए।
11. अनुशासन अनुरक्षण - अनुशासन एक प्रकार का बल है, जो समूह के प्रत्येक सदस्य को समूह के नियमों, प्रथाओं, आदतों, परम्पराओं, आदि के अनुसार उत्पन्न परिस्थितिमें वैयक्तिक एवं सामूहिक रूप से प्रतिक्रिया को जन्म देता है।

12. उच्च समूह मनोबल का विकास-नेता निरन्तर अपने समूह के सदयों का मनोबल ऊंचा बनाये रखता है, क्योंकि मनोबल बढ़ने के साथ लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में किये जाने वाले प्रयासों में प्रबलता आती है और मनोबल के गिरने के साथ यह प्रबलता क्षीण हो जाती है।

5. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का मुख्य स्तंभ शिक्षक है:

चूंकि स्कूल की सुधार योजना का अंतिम उद्देश्य छात्र उपलब्धि के स्तर में सुधार करना है, जिसने विद्यालय के दिनों में छात्रों पर सबसे अधिक प्रभाव डाला है, शिक्षक-स्कूल विकास योजना प्रक्रिया में कई महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाती हैं। सुनिश्चित करें कि सुधार के लिए कक्षा रणनीतियों को सीखने के सभी स्तरों पर छात्रों की जरूरतों को पूरा करना। छात्रों को विभिन्न तरीकों से मूल्यांकन करें और छात्र उपलब्धि के स्तर में सुधार के लिए रणनीतियों का विकास करें।

1. शिक्षक का चयन
2. केंद्रित व्यावसायिक विकास (शिक्षकों को सशक्तीकरण)
3. सांस्कृतिक योग्यता और सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी)।
4. शिक्षक पर अधिक काम का लोड
5. शिक्षण कर्मचारी की उपस्थिति में सुधार
6. गुणवत्ता के लिए प्रमुख संकेतक

6. शिक्षक की जटिल भूमिका

वर्तमान युग में शिक्षा का स्वरुप बदल गया है. आज शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है और यह परिवर्तन निरंतर जारी है. चूँकि शिक्षा अधिगम प्रक्रिया में नए-नए प्रयोग हो रहे हैं अतएव इसके साथ ही शिक्षकों की भूमिका में भी बदलाव की जरुरत है. प्राचीन शिक्षकों की तुलना में आज शिक्षकों की भूमिका अधिक जटिल हो गयी है. आधुनिक शिक्षण तकनीक प्राचीन व्याख्यान से अलग है। वर्तमान में शिक्षण मात्र विषय पाठों का औपचारिक व्याख्यान नहीं है अपितु छात्रों के अधिगम अनुभवों का विस्तार है. शिक्षा कक्षा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि शैक्षिक वातावरण के बजाय, घर और समुदाय में और दुनिया भर में फैली सूचनाओं का आदान प्रदान है। छात्र तथ्यों के उपभोक्ता नहीं हैं। वे ज्ञान के सक्रिय सर्जक हैं। विद्यालय सिर्फ कंक्रीट संरचनायें नहीं हैं बल्कि वे आजीवन सीखने के केन्द्रों में का रूप ले रहे हैं। और, सबसे महत्वपूर्ण, शिक्षण हमारे देश के सामाजिक, सांस्कृतिक, और आर्थिक स्वास्थ्य के लिए पूरी तरह से महत्वपूर्ण, सबसे चुनौतीपूर्ण और सम्मान्नीय कैरियर विकल्पों में से एक के रूप में मान्यता प्राप्त है। परिश्थिति में आये इस प्रकार के परिवर्तन प्रभावी अध्यापकों की मांग करते हैं. पारंपरिक रूप से जिसे

प्रभावी माना जाता रहा है, आज की परिस्थितियों में वह शायद प्रासंगिक न हो . शिक्षक आज जिन परिस्थितियों का सामना कर रहा है वैसी स्थितियां पहले कम दिखाई देतीं थीं. अतः उन्हें उस संगठनात्मक सन्दर्भ में विभिन्न दक्षताओं का प्रभावी प्रचालन करना होता है , जो पिछले कुछ दशकों से भिन्न है. शिक्षा में परिवर्तन और सुधार के प्रस्तावों का स्वरुप चाहे कुछ भी हो, उनका कार्यान्वयन इस पर निर्भर करता है कि शिक्षक उन्हें किस रूप में देखते हैं. और कक्षा में उन्हें किस प्रकार रूपांतरित करते हैं. कई शिक्षक आज शिक्षण के कला और विज्ञान दोनों स्वरूपों को स्वीकार करते हैं व संस्थान द्वारा भी उन्हें नए तरीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। शिक्षक की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका छात्र के सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, रूचियों, योग्यताओं को जानना व् एक व्यक्ति के रूप में छात्र व अपनी अद्वितीय जरूरत को समझने में है।

7. शिक्षक ज्ञानप्रदाता के रूप में

षिक्षक का स्थान बड़े महत्व व गौरव का है। षिक्षा का वृहद उद्देष्य है बालक का सर्वांगीण विकास। इस महान लक्ष्य को षिक्षक के बिना प्राप्त नहीं किया जा सकता। वस्तुस्थिति यह है कि षिक्षक आत्मज्ञान, आत्मनिर्देषन तथा ज्ञान का भंडार होता है। वह विभिन्न क्रियाकलापों व व्याख्यानों के द्वारा बालकों तक इस ज्ञान का हस्तांतरण करता है। वह अपने आदर्षमय जीवन से बालक को पवित्र बनाने के लिए ऐसा सुंदर वातावरण तैयार करता है, जिसमें रहते हुए छात्रों का सर्वांगीण विकास हो सके। दूसरे शब्दों में उसका कार्य बालकों की सहानुभूतिपूर्ण सहायता करके उनका उचित दिषा मंे मार्गदर्षन करना है और यह षिक्षा प्रक्रिया के द्वारा संभव होता है। षिक्षा प्रक्रिया का उद्देष्य बालक के ज्ञान की वृद्धि करना है। प्लेटो का तर्क है कि बिना बुद्धि के ज्ञान नहीं हो सकता और बिना ज्ञान के विवेक नहीं हो सकता और बिना विवेक के सत्य और असत्य तथा सही और गलत में भेद नहीं किया जा सकता। अतः षिक्षा के द्वारा ही मनुष्य की बुद्धि एवं विवेक शक्ति का विकास किया जा सकता है। इस प्रकार षिक्षा प्रक्रिया ज्ञान की प्रक्रिया भी है और षिक्षक ज्ञानप्रदाता के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, क्योंकि षिक्षक को अपने विषय का पूर्ण स्वामित्व है। साथ ही वह षिक्षण वृत्ति के प्रति निष्ठावान है और इस व्यवसाय को वह अपनी स्वेच्छा से चयन करते हैं।

ज्ञान प्रदाता के रूप में षिक्षक निम्न विधियों द्वारा छात्रों तक ज्ञान का हस्तांतरण करता हैः-

1. अनुदेषन - यहाँ अनुदेषन का अर्थ होता है, षिक्षण के लिए षिक्षक द्वारा पाठ्यवस्तु के स्वरूप की व्यवस्था करना। हरबर्ट ने षिक्षा के अध्यापन कार्य में इसको आवष्यक माना है। षिक्षण की प्रक्रिया या सम्पादन अनुदेषन की सहायता से ही किया जाता है। षिक्षण द्वारा बालक के मस्तिष्क में विभिन्न प्रकार की सूचनाओं तथा सामग्री से भरना नहीं है। अपितु बालक को उसका आत्मसात् करना है, जिसे परिमाण भी कहते हैं। इसमें षिक्षक को सहानुभूतिपूर्ण अनुदेषन का प्रस्तुतीकरण करना आवष्यक है।

2. सक्रिय शिक्षा विधि - षिक्षक षिक्षा की प्रक्रियाओं द्वारा जो परिस्थितियां उत्पन्न करते हैं, उससे बालक के अनुभवों का विस्तार होता है और वे नए ज्ञान को अर्जित करते हैं। षिक्षा प्रक्रिया में छात्रों के अनुभवां ा का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रकृतिवादी भी इसके पक्षधर हैं और षिक्षा प्रक्रिया को अनुभव केंद्रित मानते हैं। इसे सक्रिय षिक्षा भी कहते हैं। षिक्षक को अपने अनुभवों को बालकों को नहीं देना है, अपितु ऐसी समुचित परिस्थितियां उत्पन्न करना है, जिनसे छात्रों को नए अनुभव प्राप्त हो, वही नए ज्ञान का स्वरूप होता है।

3. व्याख्यान विधि - ज्ञान की दृष्टि से हरबर्ट ने इसको अधिक महत्व दिया है। इसमें षिक्षक अधिक क्रियाषील रहता है तथा छात्र केवल स्रोतों के रूप में ही रहते हैं। इसमें पाठ्यवस्तु के पुष्टिकरण पर अधिक बल दिया जाता है। यह विधि षिक्षक केंद्रित तथा पाठ्यवस्तु केंद्रित होती है। इसके प्रयोग करने में कुछ सावधानियां भी रखी जाती है। षिक्षक द्वारा अच्छे व्याख्यान की प्रस्तुति के लिए एक वैध स्थान होता है, जिसमें वस्तुगत जानकारी के निष्चित प्रतिनिधान प्रस्तुत किए जाते हैं या जिसमें उपदेष, विष्वास या व्याख्याएं सलाह के रूप में बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से प्रस्तुत किए जाते हैं। इसमें षिक्षक को व्याख्यान तथ्यों या विचारों को स्वरलेखन यन्त्रपरक पुनरावृत्ति से बचना चाहिए तथा विद्यार्थियों के प्रष्न, अगुहिया, निर्णय को अधिक से अधिक अवसर प्रदान करना चाहिए। व्याख्यान विधि का उपयोग षिक्षक एक प्रविधि या सहायक प्रविधि के रूप में भी करते हैं। यह कला की सर्जनात्मक कृति के रूप में भी प्रयोग होती है। इस विधि द्वारा षिक्षक छात्रों को उनकी आवष्यकता के अनुरूप अनुक्रिया करने को प्रेरित करता है। माध्यमिक विद्यालयों में ज्ञान हस्तांतरण के लिए व्याख्यान विधि का प्रयोग अधिक होता है।

4. प्रश्नोत्तर विधि - प्रश्नोत्तर विधि को सर्वप्रथम सुकरात ने दिया और इसके उपयोग में उनकी अवधारणा थी कि विश्व का समस्त ज्ञान बालक में निहित होता है, जो जन्म-मरण की प्रक्रिया में मुड़ जाता है। अतः षिक्षक द्वारा प्रष्नों की सहायता से उस ज्ञान को घोलने का प्रयास किया जाता है। उनका मानना है कि कोई भी ज्ञान बाहर से नहीं दिया जा सकता है। अतः ज्ञानप्रदाता के रूप में षिक्षक इस विधि का बहुतायत उपयोग करते हैं व यह महत्वपूर्ण स्थान रखती है। इस विधि में छात्र और षिक्षक दोनों ही तत्पर तथा क्रियाषील रहते हैं। आज के प्रजातांत्रिक युग में इस विधि को विषेष महत्व दिया जाता है क्योंकि षिक्षा को एक अन्तः प्रक्रिया माना जाता है।

शिक्षक ज्ञान प्रदाता के रूप में ज्ञान का आदान-प्रदान करता है। अतः यह विधि इसमें विशेष भूमिका निभाती है। इस विधि के उपयोग से विचार-विमर्ष करना संभव है। जब अध्ययन विषय में चिंतन सम्बद्ध होता है और तत्परता से इस प्रकार के अध्ययन के लिए अपने को समर्पित करता है। चर्चा को गति देने में षिक्षक विचारोत्तेजक प्रष्नों के सजग प्रयोग के द्वारा अनेक बातें कर सकता है। वह अध्ययनगत् विषयवस्तु को महत्ता और अर्थ प्रदान कर सकता है। षिक्षक ऐसे विकल्पां ा द्वारा विद्यार्थियों को उलझन में

डाल सकता है, जो उसके निर्णयों को आमंत्रण दें। षिक्षक उसके समझ विचारों के विकल्प प्रस्तुत कर सकता है, जो शायद अन्यथा उसे न सूझें और वह विद्यार्थी के सम्मुख विचारों और मतों की विषालता के कुछ रूपों को व्यक्त कर सकता है, जिनका सम्मान वह तब करेगा, जब वह स्वयं स्वेच्छा से जगत में प्रवेष करेगा। प्रष्नोत्तर विधि के द्वारा ऐसी परिस्थितियों का सृजन किया जाता है, जिसमें छात्र और षिक्षक दोनों ही क्रियाषील होते हैं और इसमें विद्यार्थी स्वयं भी अपनी क्षमताओं के अनुसार अपने विचार को रखते हैं और षिक्षक से प्रष्न भी करते हैं। योग्य षिक्षक विद्यार्थियों के प्रष्नों का उत्तर देने का प्रयास करते हैं तथा अपनी षिक्षा पाठ्यवस्तु से संबंध स्थापित करते हैं। ज्ञानप्रदाता के रूप में कभी-कभी षिक्षक स्वयं प्रष्न करते हैं और उसके संबंध मंे अपने विचारों को प्रस्तुत करते हैं। यह विचार या प्रष्न दीक्षा के साधन होते हैं। इनका प्रयोग षिक्षक उस समय करता है, जब छात्रों के विचार अधिक उग्र होने लगते हैं

ज्ञान प्रदाता के रूप में षिक्षक को यह सावधानी बरतनी होती है कि ज्ञान का आदान-प्रदान उस स्तर तक न पहुँचे, जहाँ छात्र समझने में अपने को असहाय व असमर्थ समझे। हार्न बड़ी तत्परता से स्वीकार करते हैं कि परिचर्चा यदि योग्य षिक्षक के हाथ में नहीं है, तो षिक्षण की प्रक्रिया व्यर्थ होगी। अतः ज्ञानप्रदाता के रूप में षिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है और इसका उचित निर्वहन एक कुषल षिक्षक ही कर सकता ळें

8. शिक्षक सुविधाप्रदाता के रूप में

सुविधाप्रदाता के रूप में शिक्षक एक समग्र भूमिका निभाता है जो शिक्षक की क्षमताओं और सामान्य ज्ञान के कई पहलुओं का आह्वान करती है। इसे उचित रूप से परिभाषित करना कठिन है. यह शिक्षक का एक और अधिक जटिल दृश्य को विकसित करने में सबसे महत्वपूर्ण अग्रिमों में से एक है। जो शिक्षक छात्रों में व्यक्तिगत विकास को प्रेरित करते हैं वे बेहद समर्पित, असाधारण, योग्य, और अद्वितीय हैं। इसके लिए उनमे एक आत्म आश्वासन की आवश्यकता है. शिक्षक छात्र की आतंरिक शक्तियों के विकास में मदद करता है जिनसे छात्र स्वयं भी परिचित नहीं है. यह वही अपरिभाष्य अंतर है जो प्रशिक्षण और शिक्षा, उपदेश और शिक्षण के मध्य है. जब शिक्षक सुविधाप्रदाता के रूप में होता है तो कक्षा में छात्रों के व्यक्तित्व विकास में उन्नयन वृद्धि होती है. सीखने की प्रक्रिया में शिक्षक केंद्रीय भूमिका में होते हैं। वर्तमान युग में शिक्षा प्रक्रिया में में सुचना और तकनीक का आगमन हो गया है. आईसीटी का उपयोग कर रहे शिक्षक के सुविधाप्रदाता की भूमिका में बदलाव होने से शिक्षकों द्वारा कक्षा में नेता के रूप में सेवा करने की जरूरत समाप्त नहीं हो जाती. शिक्षक के पारम्परिक नेतृत्व कौशल और उसका प्रयोग अभी भी महत्वपूर्ण हैं .विशेष रूप से उनके लिए, जो पाठ योजना, तैयारी तथा उनके फॉलो-अप में शामिल हों। इसमें पाठ की योजना

बनाना महत्वपूर्ण है अनुसंधान से पता चलता है कि जहां योजना अनुचित रूप से बनाई गई हो वहां छात्र का काम अक्सर विकेन्द्रित होता है और इससे लक्ष्य प्राप्ति में कमी आ सकती है।

सुविधाप्रदाता की भूमिका में शिक्षक का कार्य छात्रों को मार्गदर्शन देना है।शिक्षक की विशिष्ट भूमिका है

1. छात्रों को सूचित करने के लिए, प्रोत्साहित करने के लिए
2. एक लक्ष्य के रूप में समस्या को पहचानने में
3. खुद सीखने में उन्हें सुविधा प्रदान करने में
4. उचित विश्लेषण निरीक्षण करने में मार्गदर्शन देने में
5. स्वयं अपने लक्ष्य साकार करने मे
6. स्वयं निर्णय लेने मे.

निष्कर्ष:

अतः एक कुशल सुविधाप्रदाता के रूप में शिक्षक कक्षा में उचित वातावरण का निर्माण करे. तदापि विषय वस्तु के उचित अधिगम के लिए छात्रों को प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करे. व् उचित विश्लेषण निरीक्षण करने में मार्गदर्शन देने में समर्थ हो ताकि छात्र स्वय उत्तर खोजने के लिए प्रेरित हों व अन्तत उत्तर तक पहुँच सके. और इस भूमिका में शिक्षक को सरलीकरण दृष्टिकोण रखना चाहिए. व्याख्यान देने और उपदेश से बचना चाहिए. अधिक विश्वास और प्रबल को चर्चा का नियंत्रण या संचालन की अनुमति न दें. पूर्व परिदृश्य में शिक्षार्थी एक निष्क्रिय भूमिका निभाता है अपितु इस परिद्रश्य में शिक्षार्थी सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाता हैं इससे शिक्षक की बदलती भूमिका भी परिलक्षित होती सीखने के लिए रचनावादी दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जिसमे 'शिक्षक द्वारा ज्ञान देने' के बनिस्पत 'छात्रों द्वारा स्वयं ज्ञान के निर्माण पर जोर दिया जाता है. शिक्षक द्वारा छात्रों के साथ छोटे समूहों के सत्र में एक अनौपचारिक तरीके से संवाद करने की क्षमता की जरूरत है. इसमें खुले रूप में विचार विमर्श को प्रोत्साहित किया जाता है. सुविधाप्रदाता के रूप में शिक्षक में सिर्फ विषयवस्तु का ज्ञान पर्याप्त नहीं होता अपितु कई कौशलों की आवश्यकता होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1- Indian Journal of Educational Research Vol 27 No. 1, Janaury- June 208 pp – 69-75

2. भारतीय षिक्षा षोध पत्रिका वर्श 27, अंक 2 जुलाई - दिस्मबर 2008, पृ.स.43.47

3. भारतीय षिक्षा षोध पत्रिका वर्श 28, अंक 1 जनवरी-जून 2009, पृ.स.39.48

4. भारतीय षिक्षा षोध पत्रिका वर्श 28, अंक 1 जनवरी-जून 2009, पृ.स.95.101

5. Journal of Educational studies 2009 vol- 7 No – 1 pp34-51

6. रमा षर्मा.(2009) पी-एच.डी. उच्च अध्ययन षिक्षा संस्थान गॉधी विद्या मन्दिर सरदारषहर।

7. Dr. V.Subhuraj, PGT(English) KV OCF Avadi Project Work online available

8. वर्मा, अरूणा (2009) पी-एच.डी. उच्च अध्ययन षिक्षा संस्थान गॉधी विद्या मन्दिर सरदारषहर।

9. भारतीय षिक्षा षोध पत्रिका वर्श 34, अंक 1 जनवरी-जून 2010, पृ.स.101-108

10. Sharma, A. (2012) IASE Deemded University Unpublished Thesis